6

हमारा पर्यावरण

फौजी चाचा के बगीचे में रवि, डेविड, आयुष, रानी और रजिया खेल रहे थे। वहाँ अनेक तितलियाँ उड़ रही थीं तथा पेड़ों पर चिड़ियाँ भी चहचहा रही थीं।

रवि ने पूछा–यहाँ तो खूब तितलियाँ एवं चिड़ियाँ हैं। मेरे घर में तो एक भी नजर नहीं आती।

रानी ने कहा– तेरे घर में पेड़ है क्या?

रवि ने कहा– नहीं।

अचानक रवि पौधे के पास बैठकर फूल एवं पत्तियों को तोड़ने लगा। आयुष ने उसे ऐसा करने से मना किया, लेकिन रवि नहीं माना।

डेविड ने कहा– पौधों को नुकसान पहुँचाना अच्छी बात नहीं। चाचा देखेंगे तो वो हम सब को डाँटेंगे।

पौधों को पानी दे रहे फौजी चाचा ने बच्चों की बातें सुन ली। पास आकर वे बोले–बेटा आप लोग झगड़ा क्यों कर रहे हैं ?

बच्चे चुप हो गए। चाचा ने वहाँ गिरे पत्तों एवं फूलों को देखा। वे सारी बात समझ गए।

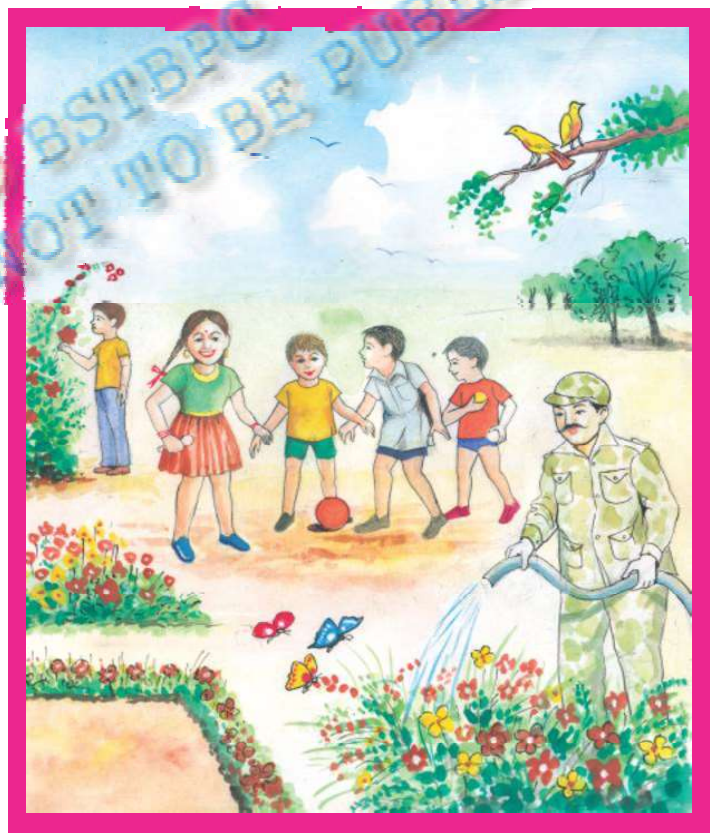

चित्र–6.1 फौजी चाचा का बगीचा

©BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

नदी, पहाड़, जंगल, जीव–जन्तु, घर, सड़क, पुल, मानव रीति–रिवाज, परम्पराएँ आदि पर्यावरण के घटक हैं

उन्होंने सभी बच्चों को अपने पास बैठाया और पूछा– बेटा, इन्हें किसने तोड़ा?किसी ने जवाब नहीं दिया।

चाचा ने कहा–देखो बच्चों, ये पेड़ हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं। पेड़–पौधे, नदियाँ, पहाड़, जंगल ये सभी हमारे पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। ये किसी न किसी रूप में हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं।

चाचा ने रजिया से पूछा–बताइए अगर पेड़–पौधे नहीं होंगे तो क्या होगा?

रजिया बोली–चाचा, हरियाली नहीं होगी।

डेविड बीच में बोल उठा–हमें फल, सब्जियाँ, अनाज कुछ भी तो नहीं मिल पायेगा।

तभी आयुष बोला–वातावरण में बढ़ रहे कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) को भी तो पौधे ही ग्रहण करते हैं। अगर पेड़– पौधे नहीं होंगे तो सभी जगह कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा अधिक हो जाएगी और हमारा साँस लेना भी मुश्किल हो जाएगा। रानी ने कहा–मेरी मम्मी तो कहती है कि कपड़ा भी पौधों द्वारा प्राप्त कपास से बनता है। रवि बोला–हाँ, कागज एवं रबड़ भी पेड़–पौधों से प्राप्त पदार्थ द्वारा ही बनाये जाते हैं।

चाचा ने कहा–बिल्कुल ठीक। अब सोचिए, अगर हम इसे लगातार नष्ट करते रहे तो इसका जीवन पर क्या असर पड़ेगा? सभी बच्चों ने एक साथ कहा–फिर तो हमारा जीवन बड़ा कष्टप्रद हो जाएगा। अब रजिया को अपने किए पर पछतावा हो रहा था।

चाचा ने कहा– आइए हम सब मिलकर एक काम करते हैं। अपने दैनिक जीवन में हम जिन वस्तुओं का उपयोग करते हैं, उनकी सूची बनाते हैं। सबने मिलकर सूची बनाई –

साधन/सामग्री की सूची

पेड़, सड़क, तालाब, नदी, कार, कपड़े, बैलगाड़ी, टमटम, कार, साइकिल, पर्वत, मकान, बिजली का खंभा इत्यादि।

बच्चों आप इस सूची में और क्या–क्या जोड़ सकते हैं ?

© BSTBC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चित्र–6.2 : पर्यावरण के घटक

वायुमंडल में कई प्रकार की गैस धूलकण एवं जलवाष्प उपस्थित रहते हैं। वायुमंडल की गैसे अजैव पर्यावरण के उदाहरण हैं।

पेड़–पौधे एवं जीव–जन्तु मिलकर सजीव जगत का निर्माण करते हैं। इस मंडल को जैवमंडल कहा जाता है। सभी पेड़–पौधे, जीव–जन्तु एवं मानव जीवित रहने के लिए अपने पर्यावरण पर ही आश्रित होते हैं। ये एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। सजीवों का आपसी एवं पर्यावरण के बीच की परस्पर निर्भरता **पारितंत्र** कहलाता है।

चाचा ने बच्चों से पूछा–तालाब में कौन–कौन सी चीजें मिलती हैं ?
बच्चों ने सोचा और बताया–पानी, मछली, बत्तख, बगुला, मेढक, कीड़ा, घोंघा, जोंक, काई, पानी की वनस्पति इत्यादि।

चाचा ने समझाया कि ये सभी पानी में जिन्दा रहने के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं इसलिए यह तालाब का पारितंत्र है। इसी प्रकार कई पारितंत्र होते हैं।
बच्चों की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी। चाचा ने आगे कहा–मनुष्य अपनी जरूरतों के हिसाब से पर्यावरण में परिवर्तन लाता रहता है। उन्होंने बच्चों से कुछ प्रश्न पूछा–

- अगर घर नहीं हो तो क्या–क्या कठिनाई होगी ?
- अगर परिवार नहीं हो तो क्या–क्या दिक्कतें आयेंगी ?
- अगर बाजार बन्द हो तो क्या परेशानी होगी ?
- अगर गाड़ियाँ बन्द हो तो क्या दिक्कतें आऐंगी ?
- खूब सर्दी पड़े तो हम क्या करते हैं ?

रजिया ने कहा –घर नहीं रहने पर हम रहेंगे कहाँ? धूप, हवा, वर्षा से कैसे बचेंगे?
डेविड बोला–परिवार के साथ ही तो हम अपने सुख–दुःख बाँटते हैं।
आयुष बोला–बाजार बन्द होने पर तो जरूरत की कोई चीज मिल ही नहीं पाएगी।

चाचा ने बताया–**हमारे चारों ओर पाए जाने वाले प्राकृतिक एवं मानवीय दशाओं के आवरण को पर्यावरण कहते हैं।**
दुनिया में बहुत सी वस्तुएँ ऐसी हैं जो प्रकृति या वातावरण से मिलती हैं। जैसे पेड़–पौधे, नदी, पहाड इत्यादि। यह प्राकृतिक वस्तुएँ कहलाती हैं तथा प्राकृतिक पर्यावरण का निर्माण करती हैं।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

बहुत सारी वैसी वस्तुएं हैं जिसे मनुष्य ने अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राकृतिक वस्तुओं को परिवर्तित करके बनाया है। अतएव, इसे मानव निर्मित पर्यावरण कहते हैं। जैसे — मकान, पुल आदि।

चाचा ने यह चित्र बनाया —

चित्र—6.3 : पर्यावरण के क्षेत्र

चाचा ने अपने बनाये चित्र दिखाकर कहा कि सभी सजीव एवं निर्जीव प्राकृतिक वस्तुओं के मिलने से प्राकृतिक पर्यावरण का निर्माण होता है। जैसे—जल, भूमि, हवा, पेड़—पौधे, पर्वत, नदी इत्यादि। ये सभी हमें प्रकृति द्वारा प्राप्त होते हैं। स्थल, जल एवं वायु से घिरे सभी भाग इसके अन्तर्गत आते हैं। भूमि का वह भाग जिसपर जीव रहते हैं। (जैसे—मकान, पेड़—पौधे, पर्वत, पठार, मैदान, इत्यादि) इन सभी को स्थल मंडल कहते हैं। विभिन्न प्रकार के खनिज लवण अजैव पर्यावरण के उदाहरण हैं। जबकि पेड़—पौधे, जीव—जन्तु यहाँ तक कि मानव भी जैव पर्यावरण के अंग हैं।

कुआँ, तालाब, नदी, झील, समुद्र, महासागर एवं विभिन्न जलाशय मिलकर जलमंडल का निर्माण करते हैं। उन्होंने पूछा—बच्चों! जरा सोचिए तो, जल के अभाव में कौन—कौन सी परेशानी आएगी ?

सभी बच्चों ने सोचकर बताया। तब तो बहुत परेशानी होगी। सुबह से शाम तक जल की बार—बार जरूरत पड़ती है खाना बनाने, प्यास बुझाने से लेकर शरीर को स्वच्छ रखने में इसकी जरूरत है।

चाचा ने कहा—क्या हमें पानी बर्बाद करना चाहिए?सभी बच्चों ने नहीं में सिर हिलाया। चाचा ने कहा— चूँकि जल का भंडार सीमित है इसलिए इसका सही उपयोग हमें करना चाहिए।

चाचा ने पुनः कहा— पृथ्वी के चारों ओर वायु है। इसे वायुमंडल कहते हैं। यह सूर्य से आने वाली प्रत्यक्ष किरणों एवं हानिकारक विकिरण (पराबैंगनी किरणों) से हमें बचाता है

रानी बोली—मैं एक बार चाचा के साथ बाजार गई थी। हड़ताल के कारण सभी गाड़ियाँ बंद थीं। मुझे काफी देर तक पैदल चलना पड़ा। समय भी बहुत अधिक लगा।

रजिया ने बताया—गाड़ियों के चलने के कारण ही दूसरे राज्यों से सामग्री हमारे यहाँ

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

आती है और हमारे यहाँ की सामग्री दूसरी जगह जाती है। यात्रा कर हम दूसरे के रीति–रिवाज एवं सस्कृति को भी जान पाते हैं। हमें एक–दूसरे से यही जोड़े रखता है। यात्रा से हमें विभिन्न जानकारियाँ मिलती हैं।

फौजी चाचा बोले–बच्चों, मनुष्य ने अपने जीवन को आसान बनाने के लिए अपने आस–पास के पर्यावरण को अपने अनुसार बदला है।

उन्होंने पूछा–बच्चों, क्या हमें पर्यावरण को नुकसान पहुँचाना चाहिए। सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा–नहीं चाचा, हमें इन्हें नुकसान न पहुँचाकर इसकी सुरक्षा करनी चाहिए।

समाज में तरह–तरह के रीति–रिवाज, परम्पराएं, उत्सव आदि देखने को मिलते हैं। शादी–ब्याह के अवसर पर खुशियों में शरीक होना, छोटों को प्यार एवं बड़े–बुजुर्गों का सम्मान ये सभी हमारी सांस्कृतिक पर्यावरण के अंग हैं। मुलाकात होने पर अभिवादन के तरीके, खुशियों को व्यक्त करने के तरीके, शोक प्रकट करने के भाव, पर्व–त्योहारों पर गाए जाने वाले मंगलगीत, पहनावा, विशेष प्रकार के पकवान ये सब संस्कृति की पहचान है। यही सब मिलकर सांस्कृतिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

चाचा ने कहा–बच्चों हमें अपने इन रीति–रिवाजों, परम्पराओं के प्रति सम्मान रखना चाहिए तथा इनका पालन करना चाहिए।

सबने चाचा की बात पर सहमति जताई। चाचा ने भी सभी बच्चों को शाबाशी दी और फिर से अपने काम में लग गए।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED BSTBPC

अभ्यास

i. सही विकल्प चुनें–

(1) इनमें कौन सी प्राकृतिक पर्यावरण की वस्तु है।

(क) पुल (ख) मकान (ग) जल (घ) सड़क

(2) पर्यावरण कितने प्रकार का होता है?

(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) अनगिनत

(3) पृथ्वी के चारों ओर क्या है?

(क) वायु (ख) जल (ग) पर्यावरण (घ) सड़क

ii. खाली जगहों को भरिए –

(1) पेड़–पौधे एवं जीव मिलकर.....पर्यावरण बनाते हैं।

(2) पेड़–पौधे जीव–जन्तु जैव..... के अंग हैं।

(3) मनुष्य ने अपनी.....की पूर्ति के लिए चीजों को बनाया है।

iii. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पर्यावरण किसे कहते हैं?
2. पर्यावरण कितने प्रकार के होते हैं ?वर्णन कीजिए।
3. स्थल मंडल, जल मंडल एवं वायु मंडल किसे कहते हैं ?
4. सांस्कृतिक पर्यावरण के तहत कौन–कौन सी बातें आती हैं ?
5. मानव निर्मित पर्यावरण के कारण प्राकृतिक पर्यावरण को नुकसान पहुँचा है। कैसे ?
6. किन घटनाओं से सांस्कृतिक पर्यावरण को क्षति होती है ?
7. आपके आस पास कौन सा पारितंत्र है ? चित्र बनाकर किसी एक का वर्णन कीजिए।
8. हम किन उपायों को अपनाकर पानी के खर्च को कम कर सकते हैं।
9. पर्यावरण को नुकसान पहुँचा कर हम अपना जीवन संकट में डाल रहे हैं। कैसे ?

iv. प्रातःकालीन बाल सभा में चर्चा कीजिए–

- पर्यावरण संरक्षण
- वृक्षारोपण से लाभ
- कटता जंगल घटता जीवन
- जैविक कचरा समाप्त करने में जानवरों की भूमिका
- उन संस्थाओं के बारे में पता कीजिए जो पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्य कर रहे हैं?

v. क्रियाकलाप –

1. पर्यावरण से जुड़ी अखबार में छपी खबरों को संकलित कर कोलार्ज (बड़े पेपर पर साटना) बनाइए एवं कक्षा में प्रदर्शित कीजिए। इन बातों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कीजिए।
2. पर्यावरण संरक्षण में सुलभ इन्टरनेशनल संस्था के योगदान की जानकारी पता कीजिए।
3. अपने विद्यालय/मोहल्ला के पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए एक योजना तैयार कीजिए।

♦♦♦

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED